नंदन पंडित

गोण्डा
उत्तर प्रदेश

अथ स्त्रीकथा

कमरे में लाइट डिम थी। छत का पंखा कभी -कभी सरकारी कर्मचारियों की भाँति ऊँघ कर उठता तो घर्र घरर.. घर्र.. घरर, गांवों में स्वतंत्रता पूर्व रात के अंतिम पहर में चलने वाली चक्कियों की नाई नाच उठता। चेहरे पर उद्विग्नता का भाव लिए बेड के एक किनारे पर बैठा हुआ मुरली वाह्यतौर पर शांत था। बगल में ही सुशीला दोनों घुटनों के बीच मुँह को छुपाए सिसक रही थी। उसने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा, 'सुश्! यह क्या कर रही हो? क्यों बरबस स्वयं को मारने पर तुली हो?"

वह चुपचाप सुबकती रही। उसके मौन ने मुरली की अकुलाहट को और बढ़ा दिया। उसने अबकी बार उसके चेहरे को अपनी ओर घुमा कर पूछा तो वह बिफर पड़ी, 'काठ हो गए हैं न आप? संवेदनाएँ तो हृदय में हैं नहीं। बैल हैं न पूरे।" मुरली कुछ न बोला। 'बैल में फिर भी दिल होता है, स्वामी के प्यार व क्रोध को तो समझता है।" वह सारा गुब्बार निकाल देना चाहती थी।

सुशीला के मर्मघाती प्रहार ने आहत कर दिया उसे। वह निराशा के गहरे खड्ड में गिर गया, जहाँ दूर-दूर तक बस अँधेरा ही अँधेरा था। सुशीला की संतुष्टि ही उसकी हिम्मत थी, जो उसे घर और बाहर की झंझाओं से लड़ने का आत्मबल प्रदान करती थी। आज वह आश्रय भी ढेर हो गया।

पूरी गंभीरता से उसने पूछ लिया, 'क्या तुम मेरे साथ सुखी नहीं हो?" उसका यह वाक्य सुशीला के हृदय में सैकड़ों बाणों सा चुभा। निमिष मात्र में ही उसका धैर्य प्राकार तहस-नहस हो गया। प्रेम जब नश्वर शरीर से न होकर शाश्वत आत्मा से प्रादुर्भूत होने लगता है तो मान-अपमान, ऊँच-नीच, क्रोध-दया, घृणा-प्रेम, हार-जीत, लज्जा-निर्लज्जा आदि

मनोवृतियाँ स्वतः धराशाई हो जाती हैं। उसने तुरंत हथियार डाल दिया। अपने दोनों बांहों को पति के कंधे पर रखकर उसके सीने से चिपक कर रोने लगी, 'आप, क्यों मुझसे इतना प्रेम करते हैं?" 'कितना?" वह मुस्कराया। 'छोड़ो भी!" वह पति के सीने से हटकर पुनः उगलने लगी, 'मैं आपको कितना कष्ट पहुँचाती हूँ। मेरी बीमारी ने आपको कौड़ी-कौड़ी का मोहताज कर दिया है। पूरे परिवार के वैरी बन गए हैं आप।" मुरली ने उसका सिर अपनी गोद में रख लिया। कमरे में क्षणिक सन्नाटा पसर गया। सुशीला उनकी छाती से कस के चिपक गई।

समूचा परिवार सुशीला को नहीं पसंद करता। सबको उसके सौभाग्य से डाह है। माँ उससे कुछ अधिक ही जलती हैं। बेटियों को दुःख और बहू को सुख, वे पचा न पातीं। कभी किसी बहन को कुछ कष्ट होता तो माँ घूम फिरकर सुशीला पर ही पहुँच जातीं। वह स्मृतियों में अतीत खोजने लगा।

बुआजी आई हुई थीं। ओसारे में लेटी हुई माँ और उनमें गम्भीर नारी-विमर्श छिड़ा हुआ था। तनिक अपने घर-परिवार के बाद इनके-उनके घरों में झाँकना शुरू हो गया। आते-आते बात बहनों पर अटक गई। 'बड़ी बिटिया का क्या हाल-चाल है?" बुआजी ने पूछा। 'ठीक ही है दिदिया।" माँ ने एक दीर्घ श्वास छोड़ते हुए कहा।

'अब उसके घरवाले का व्यवहार कैसा है?" 'व्यवहार? कुत्ते की दुम भी कभी सीधी हुई है दिदिया! जैसे-तैसे काट रही है, वह बस। हर कहीं हमारे घर जैसा थोड़े है।" इधर-उधर देखकर माँ ने अंतिम वाक्य ऊँचे स्वर में पूरा किया। बुआजी माँ के समीप खिसक आईं और उनकी आँखों में आँखें डालकर पूछा, 'दामाद जी, अब भी वैसे ही हैं? दुआ-भभूत का कुछ असर हुआ?" माँ ने बिना मन के उत्तर दिया, 'अहाँ, दिदिया! पहाड़ भी कभी राह बदलता है? अभी उस दिन ही राई बराबर बात पर पीट दिया था उसने। कहा, मैं रोज-रोज तुम्हें सिटपनी (स्टेपनी) लटकाकर शॉपिंग नहीं करा पाऊँगा।"

माँ के मुखारविन्द से सारी बात सुनकर बुआ ने दम भरा, 'अरे! ओ दहिजरू! पत्नी

को शॉपिंग नहीं कराओगे तो क्या रखैलों को कराओगे?"

'अरे! नहीं दिदिया!" माँ ने बात सम्हाला, 'वह शॉपिंग को थोड़े कह रही थी, उसे अपना पेट दिखाना था, उसके पेड़ू में कई दिनों से दर्द था।" माँ की आँखें घृणा से भर आईं। वे उसी आवेग में बोलती गईं, 'बड़े आए शॉपिंग कराने! कभी कुल-खुँटान में किसी ने शॉपिंग कराया है।"

बोलते-बोलते उनका साँस फूल उठा। थोड़ी देर रुककर फिर उन्होंने तेज आवाज में छाती ठोककर कहा, 'अरे! कलेजा होना चाहिए बाजारदारी के लिए। सबका जिगरा हमारे जैसा थोड़ा है जो छींक आई नहीं कि बहू को पहुँचा दिया अस्पताल!" 'पर मुरली तो कह रहा था कि बिटिया ने अपनी ननदों से झगड़ा किया था इसलिए..!" बुआजी ने चिनगारी की लौ पर तेल डाला।

माँ बुआ को सफाई देने के लिए उतावली हो गईं। उन्होंने नफरत के साथ-साथ मुँह में भर आए कफ को नल पर जाकर खँखारा और फिर दो कुल्ला करने के बाद आकर कहने लगीं, 'अरी, नहीं। उसकी ननदें आई थीं। एक दिन उसकी आँख लग गई तो वह जरा देर से उठी। बस इतना था कि उसकी हत्यारिन सास ने पूरा घर सिर पर उठा लिया। दामादजी के भी कान भरे। तो वह मरदजात, अपने माँ की सुन-सुनकर ऊब गया और फिर पीट दिया मेरी फूल सी बच्ची को।"

आवारा कुत्तों के डर से एक कुतिया बार-बार गुर्रा कर बुआ की ओर खिसक रही थी। बुआ उसको भगाने के बाद छद्म आश्चर्य से आँखे मटकाकर बोलीं, 'पीटा? हाथ उठाया हमारी गुड़िया पर? बुरा हो.. उसकी बहन कभी पूत का मुँह न देखे।" 'पीटा क्या? ऐसा मारा कि जाड़े में बिटिया का अंग-अंग जकड़ जाता है, चलने को तरसती है वह।"

भीतर से दुःखी न होते हुए भी बुआजी ने अपना मुँह लटकाकर ऐसे प्रदर्शित किया कि गोया वह गुड़िया की दुरावस्था पर बहुत दुःखी हों। 'सब अपनी-अपनी करम कमाई है!" माँ दीर्घ निःश्वास के साथ चालू रहीं, 'एक हमारे यहाँ जरा जुबान क्या फिसली,

मच गया महाभारत, बहू चाहे पीछे रह जाए पर बेटा पहले ही तोप दाग देगा! ...लेकिन कोई बात नहीं उसने सह लिया, भगवान इसका फल उन सबों को देगा। उसके घर देर है, अँधेर नहीं।" बात समाप्त करते-करते माँ ने अपने को झूठी तसल्ली दी। 'देगा क्या? भगवान दे रहा है भौजी। देवरानी ने जीना मुहाल कर रखा है उस बुढ़िया का। पहिल पठौनी में ही उसने अपना रंग दिखा दिया है सबको।"

माँ की छाती को थोड़ी ठंडक मिली। वे आकाश की ओर निहार कर राहत की साँस लेती हुई गदगद कंठ से बोली, 'हे भगवान तुम ही देखो!" फिर सहसा झपटकर बुआजी से पूछ उठीं, 'यह किसने कहा दिदिया?"

'किसने क्या? गुड़िया के सास की भौजाई ने।"

माँ के मुँह से अनायास निकल गया, 'वह कितनी अच्छी है!"

'लेकिन...!" बुआ सकुचाती हुई बोलीं, 'वह तो कह रही थी कि गुड़िया ने भी सास -ननद का जीना दूभर कर रखा है, आठ-आठ बजे तक पलंग नहीं छोड़ती।"

आत्ममुग्धता के आसमान पर माँ विराजी ही थीं कि गुड़िया पर इस एक आरोप ने उन्हें धड़ाम से जमीन पर पटक दिया। वे घायल नागिन सी छटपटा उठीं, 'मारो सत्तरजहाँ को, वह झूठी है। जरूर सुशीला ने ही उसे उलटा-सीधा पढ़ाया होगा। इसने ही गुड़िया की सास के कान भर-भरके उसकी यह गति कराई है।" उनका सीना दहकने लगा। पल भर पहले उस औरत को प्रशंसा के शिखर पर पहुँचाने वाली माँ, अब यदि वह मिल जाए तो वे उसे बिना नमक-पानी के कच्चा चबा जाएं।

बुआजी भी माँ की आँखों में खर सा चुभने लगीं। वातावरण में थोड़ी देर शान्ति छा गई।

बाहर कुत्तों का शोर बढ़ता जा रहा था। माँ ने डंडा उठाकर उन्हें भगाया तथा फिर आकर वहीं बगल में लेट गईं जहाँ बुआजी लेटकर अपनी कमर सीधी कर रही थीं।

थोड़ी देर बाद मौनता को स्वर प्रदान करते हुए बुआ ने कहा, 'अरे! ननकी का भी कुछ समाचार है?"

'हाँ, दिदिया! पूनम बड़े मजे में है।"

बुआजी झेंप मिटाती हुई वार्ता के पथ पर

आगे बढ़ीं, 'वही.. मैं उसका हाल ही लेना बिसर गई थी।"

माँ पुनः चहकने लगीं, 'बहुत सुखी है। हीरा परिवार मिला है उसे। दामाद जी तो गऊ हैं गऊ। पूनम अगर इशारा कर दे तो वह आधी रात को दुबई घुमा लाए। भगवान सबको ऐसा घर-दामाद दे।"

'वहाँ पर तो मुरली की दुल्हिन ने कुछ नहीं कहा?" बुआ माँ के कान से सट गईं। 'नहीं कहा? एड़ी-चोटी का जोर लगा डाला इस बेड़िन ने, लेकिन उसका आदमी सही था तो दाल नहीं गली।" माँ का कंठ फिर बहू के प्रति नफरत से भर गया।

घंटे भर से माँ और बुआजी की बात-चीत सुनकर मुरली ऊब गया था। उसका हृदय चीत्कार उठा। बड़ा कलेजा है, देखते नही है, चाहे मर जाए सुशीला, उसके सिवा घर में कोई कुशलक्षेम नहीं पूछने वाला। यदि वह स्वयं उपचार न कराए तो किसी को कोई परवाह नहीं। सब चाहते हैं कि सारा पैसा वह उन्हीं को सौंप दे। इतना खराब है स्वास्थ्य फिर भी एक मिनट सुशीला को चौका-बर्तन और कपड़े-लत्ते धोने से छुट्टी नहीं। सबको लगता है कि वह बीमारी का बहाना बनाती है। उसकी जो हालत है वह तो भगवान ही जानता है या तो जो भोगती है वह। कभी किसी ने नहीं जानना चाहा कि पहले पाँच साल तक बहू अच्छी भली पूरे घर में एक हाँक पर नाचती फिरती थी, अब ऐसा क्या हो गया? ... पूछना तो चाहिए। देखना चाहिए था कि उसका गौर शरीर इतना पीत कैसे हो रहा है?

मुरली सोचने लगा, उसकी नौकरी नहीं लगी थी तो इन्हीं माँ-बाबू ने सुशीला पर जो सितम ढाए कि कोई साधारण औरत होती तो आत्महत्या कर लेती किन्तु उसने उसका मान न मिटने दिया। ....चूल्हा फुँकवा-फुँकवाकर आज इस रुग्णावस्था में पहुँचा दिया तो सभी अब उसे 'असाधिन', 'रोगहिनिया' पुकारते हैं।

वह जानता है कि कितनी नरम दिल सास हैं! कैसे तुरंत बाजार भेज देती हैं! हूँह.. कभी ऐसा नहीं हुआ है कि वह अस्पताल से आए और माँजी का मुँह न फूला मिले। यह सुशीला सी महान है जो पूरे परिवार को एक माला में पिरोए हुए है। वरना वह खुद

इस पचड़े से निकल लिया होता। ...थूऽ! अपना दामाद चाहिए जो बेटी के इशारे पर नाचे और दूसरा यदि पत्नी की अति आवश्यक माँग भी पूरी कर दे तो वह जोरू का गुलाम है। ...पत्नी की दशा देखकर अब वह यदि घर में गैस सिलेंडर ले आया तो हो गया बीबी का मुँह झाँकने वाला, हो गया लुगाई का दास! ... अपना दर्द, दर्द और दूसरे का दर्द नाटक। माँ, यह एक ही आँख पर का अलग-अलग चश्मा फोड़ दो। बिन बाप की गरीब बहू को इतना न सताओ कि जहन्नुम में भी तुम्हें ठौर न मिले। मुरली का रोम-रोम पिंहक उठा।

बड़ी आईं हुँकारी भरने वाली बुआजी। कभी अपने पति का सम्मान न किया। अपने इस नारदीय गुण के कारण ही लील लिया बहू-बेटे की सुख शान्ति। पराए घर में झाँकने के इसी गुण ने बेटी-दामाद का जीवन भी तबाह कर दिया।

भीतर के तूफान ने भरभराकर उसे बाहर फेंक दिया। माँ और बुआजी के एक कान कमरे के दरवाजे पर ही लगे थे। किवाड़ खड़कते ही दोनो का निंदा पुराण बंद। वह एक झटके में सड़क पार उतर गया और घड़ी भर में थैला लटकाए फिर से अपने कमरे में प्रविष्ट हो गया।

माँ और बुआजी में पुनः कानाफूसी प्रारंभ हो गई।

'तुम सही कहती हो भौजी, यह तो वाकई जोरू का गुलाम हो गया है।" बुआ ने माँ को विष वमन हेतु प्रोत्साहन दिया। 'मैं कहती न थी दिदिया! तुम से झूठ थोड़ी न बोलूँगी। यह स्कूल से आते ही उसी के पल्लू से चिपक जाता है। राम जाने कैसे मास्टरी करता है! देखा, कैसे दीदा का पानी मर गया है इसके।" माँ बुआजी का सम्बल पाते ही फिर खुल गईं।

'कहाँ गया था?" 'और कहाँ उसी मेमजी के लिए, कुछ नर-नमकीन लेने गया होगा। मुझसे कोई बताता थोड़े है?"

बुआ ने रद्दा जोड़ा, 'काहे बताएँ? खुद कमाते हैं! कोई तुम पर आश्रित तो हैं नहीं।"

माँ तन गईं, नाक सिकोड़कर बोलीं, 'कमाते हैं तो क्या ऐसे ही इतने बड़े हो गए? माँ-बाप के बिना हाथ लगाए कमाने लगे। कितनी मुसीबतें झेली हैं

दोनों जन ने? तन-पेट काटकर पढ़ाया-लिखाया तब जाकर आज इस ओहदे पर पहुँचे हैं। ...हम दोनों जने को तो इसी हाथ तंगी में चले जाना है।" कहते-कहते माँ की आँखों से कपट की धार फूट पड़ी। बुआ ने और रंग चढ़ाया, 'सही भौजी, माता -पिता को बताना तो चाहिए ही।" 'वही तो मैं कह रही हूँ दिदिया। माँ-बाप तो बुढ़ापे में सूखे पेड़ की तरह हैं कब गिर पड़े और कहानी खत्म।.. मैं इससे धन की अपेक्षा थोड़े करती हूँ। जब अपने आदमी के कमाई से शौक न पूरा हुआ तो दूसरे से जी न भरेगा। लेकिन बता कर जाए मन डरा रहता है, दुनिया भर के गाड़ी-मोटर दौड़ते हैं सड़क पर।" माँ ने बात बदल दी। बुआजी ने भी धामिन साँप की तरह पलटी मारा, 'हो सकता है कि बहू की दवा लेने गया हो!"

'राम जाने, दर-दवाई या..? मैं किसी का झोला- झंखड़ी तो जाँचती नहीं।" बुआ ने सोहदा चढ़ाया, 'यह तो है, देखा नहीं, कैसे थैला लेकर कमरे में चला गया। एक बार भी नहीं ठिठका!"

'वही तो मैंने पहले ही कहा कि मेरा नसीब खोटा है।" माँ रोने लगी।

'रिसा गए?" मौनता का अंतराल बढ़ जाने पर सुशीला के प्रश्न से मुरली की तंद्रा भंग हो गई।

नल से पानी लाकर स्वयं उसे दवा खिलाया और फिर उसे अंकपाश में भरकर लेट गया। उसके इन्हीं अदाओं पर तो वह मर मिटी है। इन्हीं प्रणय संस्पर्श से वह जीवित है। प्रेम कड़वी औषधि है, घूट ले गए तो सारी व्याधियाँ नष्ट और न घूट पाए तो तड़पो आयु भर। प्रेम में बड़ी शक्ति होती है। प्रेम अद्वितीय है, प्रेम संजीवन है। तभी तो मीरा को विष न मार सका। प्रेम जिलाता भी है, प्रेम मारता भी है। प्रेम छीनता भी है प्रेम देता भी है। प्रेम एक ओर राम से राज्य छीन लेता है तो वहीं दूसरी ओर उनके लिए राज्य छोड़ भी देता है।

विवाह पूर्व वह किस तरह पूरे घर का लाडला था। मुरली आज अतीत से निकल ही नहीं पा रहा था। माँ तो उसे श्रवण कुमार ही कहती थीं। कितना आज्ञाकारी सपूत था। पूरे जँवार में उसकी मातृ-पितृ भक्ति

प्रसिद्ध थी। माँ को बिना दो-चार घर में ढिंढोरा पीटे चैन न मिलता, 'मेरा बड़ा बेटा, सोना है।'

विवाह योग्य होने पर लड़की वालों की लाइन लग गई थी। मोटर साइकिल, सोना, नकद सब दे रहे थे। माँ पिताजी को समझाती फिरतीं, 'देखो जी, जल्दबाजी नहीं करना। बार-बार यह शादी-ब्याह नहीं होता इसलिए सोच-विचार कर निर्णय लेना। बेटे की परवरिश में जितना खर्च किया है उसका दूना-तिगुना जो देगा, उसी के यहाँ रिश्ता करना अपने मुरली का।"

माँ, बुआ-फूफा, भाई-बहन पूरा परिवार अपनी-अपनी रस्सी बट रहा था। घर की बेटियाँ, दामाद अपने नेग की लिस्ट बनाते-बनाते तंग थे। कई रिश्ते माँ और फूफा ने लगभग फाइनल कर लिये थे। परन्तु वह बाबा जी थे जो बीच में आड़े आ गए, अंतिम झंडी उन्हीं को देनी थी।

बाबा जी के इरादे परिवार वालों के दृष्टिकोण से ठीक न थे। उन्होंने तो जैसे उनके अरमानों का गला घोटने का निश्चय कर लिया था। बाबा ने सुशीला के आजा को वचन दे दिया। बाबा का जुबान मतलब ब्रह्मा का विधान! ऊपर ब्रह्मा नीचे बाबा दोनों के बीच घुट गईं सबकी इच्छाएँ।

बाबा जी से असफल रहने पर सब उसको भड़काने लगे।

'बेटा, तुम मना कर दो इस विवाह को।"
'इसमें तेरी ही भलाई है। दायज तुम्हारे ही नर-नौकरी के काम आएगा।"

किन्तु मुरली ने बाबा का विश्वास और मान न मिटने दिया। परिवार के लाख न चाहने के बावजूद उसका विवाह सुशीला के साथ हो गया।

समय घिसटता रहा। सुशीला सास और ननदों का व्यंग्य बाण सहर्ष झेल जाती किन्तु उसका अपमान सुनकर तिलमिला उठती। उसका स्वास्थ्य दिनों-दिन बिगड़ता जा रहा था, तब भी वह घर के सारे टहल निपटाती कि कोई उसके पति पर अँगुली न उठा सके। पत्नी के प्रति उसके विश्वास को आघात न पहुँचे। वह अपने भाग्य पर इठलाती, 'भगवान आपने मुरली की पत्नी बनाकर मुझ पर बड़ा उपकार किया है।'

वह भीतर ही भीतर टूटती जा रही थी फिर भी उसके सामने सदा प्रसन्न रहने का प्रयास करती।

उसके व्यक्तित्व के सामने वह बौनी लगती पर इसे वह अपना परम सौभाग्य मानती। संसृति का प्रत्येक प्राणी चाहता है कि उसका जीवन साथी उससे श्रेष्ठ हो, वह संसार में अद्वितीय हो। फिर वह तो एक स्त्री थी, स्त्री स्वभाव ही होता है कि उसकी प्रत्येक वस्तु परिवेश में अद्वितीय हो। उनके निश्छल प्रेम का बदला तन-मन से उस स्तर पर वापस न कर पाने का उसे मलाल रहता। कदाचित उसे पूर्णतः तृप्त न कर पाने का खेद उसे मारे जा रहा था। वह पहले तो इस तरह न थी।

सुशीला का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बिगड़ता गया। सारे परिवार की निगाह में वह खटकने लगी। मुरली भी सबकी आँखों में बाल हो गया। घर के छोटे बच्चे तक उसको उललाने लगे। उसका अनादर सुशीला को सहन न होता। वह बिस्तर लग गई। अब वह उसका ही कोई कार्य बड़ी कठिनता से कर पाती। कितना भी था पर सुशीला के लिए उसका प्यार घटने के बजाय बढ़ता गया।

उसने इधर-उधर बहुत दूर तक उसका इलाज करवाया। एक से एक नामी चिकित्सकों को दिखलाया परन्तु उसकी स्थिति में सुधार न दिखता। उसका पूरा शरीर पसीना- पसीना हो जाता, साँस फूलने लगती। समय के साथ वह निर्बल होती गई। मुरली के माता-पिता पहले ही कम दायज के कारण उससे खार खाए थे, उन्हें अवसर मिल गया। मुरली पर उसे छोड़ देने का दबाव बढ़ने लगा। घर की संसद में उसके दूसरे विवाह का प्रस्ताव पारित होने लगा। उन लोगों की जो कामना-लताएँ उसके विवाह के समय मुरझा गई थी, पुनः पल्लवित होने लगीं। उस तक अनुमोदन हेतु जिस क्षण यह सम्मति पहुँची, उसने प्रस्ताव का चिंदी-चिंदी कर डाला। वह भड़क उठा, दुबारा किसी ने इस तरह की बात की तो वह सुशीला को लेकर परिवार से अलग हो जाएगा।

उसके एक ही वार से पूरा परिवार चारों खाने चित्त हो गया। किसी में साहस न हुआ, एक फलदार तरु की छाँव से वंचित रहने का। कमाऊँ पूत को छोड़ पाने का किसी में कूवत न था।

कई जगह परीक्षण हुआ पर वही ढाक के तीन पात, सुशीला की बीमारी का निदान न हो सका। उसके फेफड़ों में संक्रमण है, बस इतना ही अनुमान लगा सके डॉक्टर।

सुशीला की दवा चलती रही। मुरली का हाथ तंग होता गया। उपचार हेतु उसे बैंक से ऋण भी लेना पड़ा। विद्यालय में कार्य का बोझ, घर में बात-बात पर उलाहने, पहुँचते ही पत्नी सम्बंधी अनेकानेक शिकायतें ..वह भी मानुष था, उसका शान्त व गम्भीर स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। सुशीला से उसकी यह दशा न देखी जाती।

उस दिन वह विद्यालय से घर पहुँचा। द्वार पर काफी भीड़ लगी थी। किसी प्रबल अनहोनी की आशंका से उसका हृदय दहल गया। बाइक खड़ी करके दरवाजे पर पहुँचा। पहले से तैयार माँ उसे देखते ही जोर से फफक उठीं। आशंका को और बल मिला। सामने पहुँचते ही तो उसका सारा लहू निचुड़ गया। सुशीला भूमि पर मृत पड़ी थी। उसने छाती पीटना चाहा पर हाथ वहीं कस गए। रोना चाहा तो आँखों से अश्रु ही न निकले। अरराकर कटे पेड़ की भाँति धड़ाम से गिर पड़ा वह।

संचेतना लौटने पर वह उठकर अपने कमरे में गया। उसकी आँखों से समंदर बह रहा था। कमरे का सारा सामान विक्षिप्तों सा इधर-उधर फेंकने लगा, 'सुश, क्यों छोड़ दिया मुझे? मेरा अपराध तो बताती!"

देर तक अकेला यूँ ही रोने के बाद, उसकी दृष्टि खूँटी पर टँगे कोट पर गई। कोट उसी का था, विवाह के पिछली वर्षगांठ पर सुशीला ने जबरन उसके लिए बनवाया था। कोट की जेब से बाहर कागज का टुकड़ा लटक रहा था। उसने झट से उस कागज को बाहर निकाला। कागज कोरा न था, उस पर सुशीला के शब्द अंकित थे। पढ़ने लगा,

प्रीतम प्यारे,

मैं आपको पाकर धन्य हो गई। युग-युग तक तुम्हीं को पति चाहूँगी। हालांकि यह एक पक्षीय है, अपने हृदय की आप जानें। मेरी बीमारी से आप घर-बाहर हर जगह अपमानित होने लगे हैं। उस दिन मैं सोई नहीं थी, फोन पर बारम्बार बैंक वाला आपका निरादर कर रहा था। वह आपसे तुरंत ऋण चुकाने को कह रहा था और आप उससे कुछ समय की प्रार्थना कर

रहे थे। मुझ तुच्छ स्त्री के लिए मेरा देवता अपमानित हो, मुझे स्वीकार नहीं। डॉक्टर कहें या नहीं, पर मुझे फेफड़े का कैंसर है। मृत्यु निश्चित है, अधिक से अधिक दवा के बल पर एक-दो महीने और जी सकती हूँ। तीन दिन से मैंने दवा नहीं ली है। आप अपने को सम्हालना, सासू माँ का कहा मानना। फिर से उनका आज्ञाकारी बेटा बन जाना।

मेरी नादानियों व त्रुटियों को क्षमा कर देना। शेष अगले जन्म में यदि अवसर मिला, आपकी चरणानुरागी

परमभागी सुश् यानी सुशीला

मुरली ने गालों को भिगो रहे आँसुओं को पोछकर कागज के टुकड़े को अपने सीने से लगा लिया, जैसे कभी सुशीला को अपनी छाती से चिपकाता था।